कहानी 2

कमलनाथ का परिवार एक गांव में रहता था। परिवार में पति पत्नी के अलावा तीन बच्चे थे। एक लड़की और दो लड़के। लड़के गांव के स्कूल में पढ़ने जाते थे। एक 11 वर्ष का था और दूसरा 13 वर्ष का। उसकी लड़की, सुरेखा अभी 9 साल की भी नही हुई थी कि घर के काम–काज में मां का हाथ बंटाने लगी थी।

अपना खेत न होने के कारण कमलनाथ मजदूरी करके घर का खर्च चलाता था, पर हर समय कर्ज़ में डूबा रहता था। गरीबी से तंग आकर उसने पांचवी कक्षा में पढ़ रहे बड़े बेटे, मिट्ठू की पढ़ाई छुड़वा दी और उसे काम पर लगा दिया। उसकी पत्नी, कमला देवी ने इसका विरोध तो किया पर कलमनाथ ने उसकी एक न सुनी।

मिट्ठू के काम पर लगने से परिवार की आर्थिक स्थिति में बहुत कम सुधार आया क्योंकि उसे दिन में 10–10 घंटे काम के बदले मात्र 1200 रुपए महीने ही मिलते थे। फिर कमलनाथ ने छोटे बेटे बिट्टू की पढ़ाई छुड़वा दी और उसे भी एक ढाबे में काम पर लगा दिया।

कमला देवी का मन कराह उठा! बिट्टू दूसरे की जूठन धोकर कितना कमा लेगा! उससे न रहा गया। उसने सुना था कि पंचायत और स्कूल की देख–रेख करने वाली समितियों के लोग भी बच्चों की शिक्षा के लिए जिम्मेदार हैं और बाल मजदूरी पर रोक लगा सकते हैं। वह अपनी समस्या लेकर ग्राम प्रधान के

पास गई। ग्राम प्रधान ने पंचायत समिति के सदस्यों और विद्यालय के प्रधान अध्यापक को भी बुला भेजा।

सबने मिलकर कमला देवी की बात सुनी। प्रधान अध्यापक और समिति के सदस्यों का कहना था जब मिट्ठू और बिट्टू ने स्कूल छोड़ा तो दुःख के साथ हैरानी भी हुई क्योंकि स्कूल की शिक्षा निःशुल्क है, बच्चों को दोपहर के भोजन के साथ, ड्रेस और किताबें भी मिलती हैं।

कमला देवी ने कहा, "पर आप हमारे घर की हालत नहीं जानते। जब दो वक्त की रोटी तक नसीब नहीं हो तो बच्चों को काम पर भेजना ही पड़ता है।"

तभी ग्राम प्रधान बोले, "कमला देवी, तुम एक काम क्यों नहीं करती। गांव में मनरेगा का जो काम चल रहा है उसमें मजदूरी क्यों नहीं कर लेती।" ग्राम प्रधान की बात को कमला देवी ने कुछ हिचकिचाहट के साथ मान ली, क्योंकि उसका पति, औरतों के घर के बाहर काम करने के खिलाफ था।

ग्राम प्रधान और विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों ने उसे सांत्वना देते हुए कहा, "कमलनाथ को हम मना लेगें।" और फिर प्रधानाध्यापक से बोले, "आप बच्चों को वापस स्कूल में भर्ती कराने का प्रबंध कर दीजिए।"

कुछ समय बाद, कमला देवी भी काम करने लगी। परिवार की आय अच्छी हो गई। बच्चों से काम छुड़ाकर उनका फिर से स्कूल में दाखिला करवाया गया। मिट्ठू और बिट्टू का बचपन वापस लौट आया। बाल मजदूरी के अभिशाप से उन्हें बचा लिया गया। पर क्या हमेशा ऐसा होता है, क्या हर जगह ऐसा होता है?

पर सुरेखा का क्या होगा?
क्या एक जागरूक मां की तरह कमला देवी आगे चलकर उसे भी स्कूल में भर्ती कराएगी और बाल मजूदर बनने से रोकेगी? सुरेखा अनपढ़ तो नहीं रह जाएगी, उसकी छोटी उम्र में शादी तो नहीं कर दी जाएगी?

1

2

3

4

5

6

7

8

चर्चा के बिन्दुः

- बाल मजदूरी क्या होती हैं?
- पंचायत और समितियों की जिम्मेदारियां क्या होती हैं और ये कैसे काम करतीं हैं?
- घर की आर्थिक हालत सुधारने के लिये घर के बच्चों से काम क्यों नहीं करा सकते हैं, इसमें कौन सी खराब बात है?
- गांव में हमेशा मनरेगा जैसा रोजगार तो नहीं मिलता रहेगा, जहां हम लोग काम करते रहें और हमारे बच्चे नियमित स्कूल जाते रहें।

Concept and Design: New Concept Information Systems Pvt. Ltd., New Delhi

Supported by

unicef

unite for children